नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)
जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com
वेबसाइट : www.hindivishwa.org

हिंदी विश्वविद्यालय में रचना पाठ

डॉ. दामोदर खड़से, डॉ. ऊषा शर्मा, डॉ.चंद्रकला त्रिपाठी, बुद्धिनाथ मिश्र ने किया रचना पाठ

हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग का आयोजन

वर्धा, 24 जून 2016: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग

में गुरुवार, 23 जून को बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के प्रो. वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी की अध्यक्षता में रचना पाठ का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के राइटर इन रेजीडेंस डॉ. दामोदर खडसे, डॉ. चंद्रकला त्रिपाठी तथा डॉ. ऊषा शर्मा तथा कवि बुद्धिनाथ मिश्र ने अपनी रचनाओं का पाठ किया।

कार्यक्रम की शुरुआत हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. सूरज पालीवाल के स्वागत वक्तव्य से हुई। रचना-पाठ की कड़ी में सर्वप्रथम डॉ. ऊषा शर्मा ने 'सूरज सहमा हुआ है' कहानी का पाठ किया। यह कहानी मुख्यतः उत्तराखंड के पहाड़ी-जीवन पर केन्द्रित थी। डॉ. शर्मा ने इस कहानी में बसंती और रामी के माध्यम से संपूर्ण भारतीय समाज के स्त्री-जीवन की विसंगतियों एवं मनोदशाओं को बड़े ही बेबाकी के साथ अभिव्यक्त किया। इसी क्रम में प्रो. चन्द्रकला त्रिपाठी ने 'उस अंत का मर्सिया' शीर्षक से अपनी कथा-डायरी का

पाठ किया। प्रो. त्रिपाठी ने कथांश के जरिये मध्यवर्गीय समाज के अभावग्रस्त जीवन, रिश्तों की टकराहट एवं उसकी अहमियत के साथ-साथ विश्वविद्यालयी-जीवन के तमाम उठा-पटक एवं संघर्षों को बड़े ही सिलसिलेवार

ढंग से रखने का प्रयास किया। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के अतिथि लेखक डॉ. दामोदर खडसे द्वारा 'छड़ी' कहानी का पाठ किया गया। निश्चित रूप से तेजी से बदल रहे समय एवं समाज में संवेदनाओं को कहानी में इस प्रकार से सहेज पाना नितांत कठिन कर्म है। जीवन की तमाम आपाधापी में बूढ़े पिता कहीं न कहीं उसके

(अनय) जेहन में बरकरार रहते हैं। रचना-पाठ के क्रम में हिंदी के सुप्रसिद्ध गीतकार बुद्धिनाथ मिश्र ने विविध गीतों का पाठ किया। 'अपनी चिट्ठी बूढ़ी माँ मुझसे लिखवाती है', 'मैं अचानक रंक से राजा बना' एवं 'बीत गई बातों में रात-ओ-ख़यालों की' जैसे गीत निश्चित रूप से काबिल-ए-कद्र रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रो. वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी ने रचनात्मक गोष्ठी की तारीफ करते हुए कहा कि सभी लेखकों की रचनाएँ अपने-अपने ढंग की नई सर्जना है। हमें इस तरह के लेखन को जीवंत बनाए रखने की जरूरत है। साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया तथा संचालन हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. रामानुज अस्थाना ने किया। कार्यक्रम में अकादमिक-संयोजक डॉ. शोभा पालीवाल, डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी, डॉ. बीर पाल सिंह यादव, डॉ. रूपेश कुमार सिंह, डॉ. सुनील कुमार, डॉ. सुरजीत कुमार सिंह, युवा कहानीकार मनोज पाण्डेय, डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी, डॉ. शैलेश कदम मरजी, डॉ. देवेन्द्र पाण्डेय, बी. एस. मिरगे, शोधार्थी प्रदीप त्रिपाठी के साथ अन्य विद्यार्थी एवं शोधार्थी उपस्थित थे।